ग्रामीण विकास विभाग
बिहार सरकार

अन्दर के पृष्ठों में...

जीविका से बदली
रीता कुंवर की जिंदगी
(पृष्ठ – 02)

दीदी की उड़ान
जीविका के संग
(पृष्ठ – 03)

सतत् जीविकोपार्जन योजना की बदौलत
ताड़ी और शराब को छोड़
रंजू कर रही मवेशी पालन
(पृष्ठ – 04)

सतत् जीविकोपार्जन योजना

एक नई राह

माह – सितम्बर 2025 ।। अंक – 50

क्रमिक वृद्धि से सतत् जीविकोपार्जन योजना की लाभार्थी कर रही तरक्की

सतत् जीविकोपार्जन योजना बिहार सरकार की एक महत्वाकांक्षी पहल है, जिसका उद्देश्य समाज के उन अत्यंत निर्धन परिवारों का सामाजिक एवं आर्थिक सशक्तिकरण करना है जो कभी ताड़ी और देशी शराब के उत्पादन एवं बिक्री जैसे कार्यों से जुड़े थे या फिर अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति तथा अन्य समुदायों के लक्षित गरीब परिवार हैं। इन परिवारों को मुख्यधारा से जोड़ने और उनके जीवन स्तर को बेहतर बनाने के लिए इस योजना में क्रमिक वृद्धि कार्यनीति को अपनाया गया है।

इस कार्यनीति के तहत लाभार्थियों के लिए कुछ अनिवार्य और वैकल्पिक लक्ष्य तय किए गए हैं। अनिवार्य शर्तों में यह शामिल है कि ग्रामीण क्षेत्रों के लाभार्थियों की मासिक आय कम से कम 8,000 रुपये और शहरी क्षेत्रों के लाभार्थियों की मासिक आय 10,000 रुपये तक होनी चाहिए। इसके अलावा, उनके परिसंपत्ति में 50 प्रतिशत की अतिरिक्त वृद्धि होनी चाहिए। परिवारों को दो समय का पौष्टिक भोजन उपलब्ध होना चाहिए तथा उनके पास राशन कार्ड भी होना आवश्यक है। साथ ही, लाभार्थी के बचत खाते में हर तीन महीने में कम से कम 500 रुपये की बचत होनी चाहिए।

इन शर्तों को पूरा करने वाले लाभार्थियों को उनके क्रमिक विकास के आधार पर प्रमाण पत्र प्रदान किया जाता है। यह प्रमाणन प्रक्रिया जीविका कर्मियों और संकुल संघ की सामाजिक कार्य उप–समिति द्वारा किए गए भौतिक सत्यापन के उपरांत संपन्न होती है। इसके बाद ''मिशन स्वावलंबन कार्यक्रम'' आयोजित कर लाभार्थी दीदियों को प्रमाण पत्र सौंपा जाता है। इस अवसर पर लाभार्थी अपने अनुभव साझा करती हैं और उनकी उपलब्धियों को उत्सव के रूप में मनाया जाता है।

सतत् जीविकोपार्जन योजना के तहत अब तक पूरे बिहार में 2,01,218 अत्यंत निर्धन परिवारों का चयन किया गया है। इनमें से 1,97,234 परिवारों को एकीकृत परिसंपत्ति हस्तांतरित की जा चुकी है। इन परिवारों को प्रशिक्षित कर सूक्ष्म व्यवसाय, गव्य पालन, बकरी पालन, मुर्गी पालन, मधुमक्खी पालन तथा कृषि संबंधी गतिविधियों से जोड़ा गया है। इसके परिणामस्वरूप आज हजारों परिवार नियमित आय अर्जित कर रहे हैं और उनका जीवन स्तर बेहतर हुआ है।

योजना की सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि अब तक 1,11,832 लाभार्थी क्रमिक विकास कार्यनीति के तहत "ग्रेजुएट" बन चुके हैं। इसका अर्थ यह है कि इन परिवारों ने सभी अनिवार्य शर्तें पूरी कर ली हैं और आर्थिक एवं सामाजिक सशक्तिकरण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम बढ़ा चुके हैं। यह दर्शाता है कि योजना ने परिवारों को आत्मनिर्भर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इन परिवारों ने अपनी मेहनत और जीविका से मिली सहायता के बल पर न केवल आय बढ़ाई है, बल्कि समाज में अपनी अलग पहचान भी बनाई है।

लाभार्थियों की सतत प्रगति सुनिश्चित करने के लिए मास्टर रिसोर्स पर्सन तैयार किए गए हैं और लगातार आवश्यक क्षमतावर्धन कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। परियोजना कर्मियों द्वारा लाभार्थियों के उद्यम और गतिविधियों का नियमित भौतिक निरीक्षण और अनुश्रवण किया जाता है ताकि वे सही दिशा में आगे बढ़ते रहें।

इस योजना का सबसे सकारात्मक पहलू यह है कि यह न केवल आजीविका का साधन उपलब्ध कराती है, बल्कि परिवारों को सतत् आय का स्रोत भी देती है। क्रमिक विकास कार्यनीति से लाभार्थी दीदियाँ अपने उद्यम को निरंतर बढ़ा रही हैं और समाज में अन्य महिलाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत बन रही हैं।

सतत् जीविकोपार्जन योजना ने यह साबित कर दिया है कि यदि उचित मार्गदर्शन, प्रशिक्षण और सहयोग मिले तो निर्धन परिवार भी गरीबी से बाहर निकलकर आत्मनिर्भर बन सकते हैं। इस योजना ने न केवल आर्थिक सशक्तिकरण का रास्ता खोला है, बल्कि सामाजिक सम्मान और आत्मविश्वास भी दिलाया है। यही कारण है कि आज हजारों परिवार इस योजना से जुड़कर नई पहचान बना रहे हैं और सतत विकास की राह पर आगे बढ़ रहे हैं।

जीविका से बदली रीता कुंवर की जिंदगी

कैमूर जिला अंतर्गत भभुआ प्रखंड के मीव पंचायत के सेमरिया गांव की रहने वाली रीता कुंवर का जीवन कभी बेहद कठिन परिस्थितियों में बीत रहा था। उनके पति ओम प्रकाश गुप्ता की तबीयत अक्सर खराब रहती थी। इलाज के अभाव में उनका देहांत हो गया। रीता अपने छोटे बच्चों के साथ किसी तरह मजदूरी कर गुजारा करती थीं। रोपनी, सोहनी और कटनी के समय खेतों में मजदूरी ही उनकी आय का साधन था। सही खानपान न होने से बच्चों की तबीयत भी बार–बार बिगड़ती रहती थी। परिवार गरीबी और तंगी के दलदल में गहराता जा रहा था।

इस बीच उनकी दयनीय स्थिति को देखते हुए उनका चयन सतत् जीविकोपार्जन योजना में किया गया। चयन के बाद जब उनसे आजीविका विकल्प के बारे में पूछा गया तो उन्होंने किराना दुकान खोलने की इच्छा जताई। योजना के तहत प्राप्त जीविकोपार्जन निवेश निधि की राशि से ग्राम संगठन की दीदियों ने किराना दुकान चलाने के लिए उन्हें आवश्यक सामान उपलब्ध कराया। जीविकोपार्जन निवेश निधि के रुप में उन्हें गुमटी खरीदने के लिए 10,000 रुपये का चेक भी दिया गया। इसके अलावा जीविकोपार्जन अंतराल सहायता राशि के रुप में सात माह तक प्रति माह उन्हें एक हजार रुपये प्रदान किया गया।

धीरे–धीरे उनकी दुकान चलने लगी जिससे उनकी आमदनी में बढ़ोतरी होती गई। दुकान की आय से उनके परिवार की जरूरतें पुरा होने लगा । उन्होंने अपनी बचत से छह बकरियाँ खरीदीं और बच्चों को स्कूल में दाखिला दिलाया। अब वे अपने बच्चों के स्वास्थ्य और पढ़ाई पर पूरा ध्यान देती हैं।

आज रीता कुंवर आत्मनिर्भर बन चुकी हैं। उनका योजना है कि दुकान में सब्जी और श्रृंगार का सामान भी रखें ताकि कमाई और बढ़े। वे चाहती हैं कि उनका परिवार गरीबी से हमेशा के लिए बाहर निकल आए।

संघर्ष से आत्मनिर्भरता तक कारी देवी की प्रेरक यात्रा

मुंगेर जिले के धरहरा प्रखंड के माताडीह पंचायत के पहाड़पुर गांव की रहने वाली कारी देवी का जीवन कठिनाइयों से भरा रहा। उनके पति स्वर्गीय राम चरित्र दास की मृत्यु के बाद घर की पूरी जिम्मेदारी और दो छोटे बच्चों की परवरिश का बोझ उनके कंधों पर आ गया। परिवार की आर्थिक स्थिति बेहद कमजोर थी, और आमदनी का कोई स्थायी स्रोत नहीं था। कठिन परिस्थितियों में भी कारी देवी ने हार मानने के बजाय अपने बच्चों के बेहतर भविष्य के लिए संघर्ष जारी रखा।

2016 में धरहरा प्रखंड में शताब्दी परियोजना अंतर्गत सतत जीविकोपार्जन योजना की शुरुआत हुई, जिसका उद्देश्य गरीब एवं वंचित परिवारों को स्थायी आजीविका उपलब्ध कराना था। कारी देवी की स्थिति को देखते हुए उनका चयन योजना के लाभार्थी के रूप में किया गया। सबसे पहले उन्हें तीन दिवसीय प्रशिक्षण दिया गया, जिसमें व्यवसाय प्रबंधन और ग्राहक सेवा के बारे में जानकारी मिली। इस प्रशिक्षण से उनके आत्मविश्वास में वृद्धि हुई और उन्होंने खुद कुछ करने का निश्चय किया। योजना के तहत उन्हें प्रारंभिक निवेश निधि के रूप में 10,000 रुपये की सहायता मिली, जिससे उन्होंने अपने घर के पास एक छोटी किराना दुकान शुरू की। इसके बाद पार्जन निवेश निधि से अतिरिक्त 20,000 रुपये की सहायता मिली, जिससे उन्होंने दुकान में आवश्यक सामग्री भरी। इस पूरी प्रक्रिया में ग्राम संगठन और समिति की दीदियों ने उन्हें निरंतर मार्गदर्शन और सहयोग दिया।

कारी देवी ने मेहनत, लगन और व्यवहार कुशलता से धीरे–धीरे अपनी दुकान को सफल बना लिया। आज उनकी दुकान की आमदनी से घर का खर्च, बच्चों की शिक्षा और अन्य जरूरतें पूरी हो रही हैं। वह अब केवल आर्थिक रूप से ही नहीं, बल्कि मानसिक और सामाजिक रूप से भी सशक्त और आत्मनिर्भर बन चुकी हैं। उनकी यह कहानी उन सभी महिलाओं के लिए प्रेरणा है, जो कठिनाइयों के बावजूद अपने जीवन को बदलने का सपना देखती हैं।

दीदी की उड़ान जीविका के संग

संघर्ष से सफलता तक की प्रेरणादायक कहानी

सहरसा जिले के बनमाइटहरी प्रखंड अंतर्गत घोड़दौर पंचायत की रहने वाली सायरा बानो का जीवन कभी सुखद था, लेकिन शादी के कुछ वर्षों बाद जब उनके पति ने उन्हें छोड़ दिया तो उनकी जिंदगी अंधकारमय हो गई। सायरा बानो अपने छोटे बेटे और माँ के साथ मायके आ गईं। आर्थिक कठिनाइयों और समाज के तानों ने उनकी हालत और भी खराब कर दी। परिवार चलाने के लिए उन्हें दूसरों के घरों में खाना बनाना पड़ा।

इसी कठिन दौर में सतत् जीविकोपार्जन योजना उनकी जिंदगी में नई उम्मीद बनकर आई। योजना के तहत उन्हें पहली बार विशेष निवेश निधि से आर्थिक सहायता मिली, जिससे उन्होंने एक छोटी दुकान खोली। इसके बाद जीविकोपार्जन निवेश निधि के तहत मिली मदद से उन्होंने मनिहारी दुकान की शुरुआत की। धीरे–धीरे उनका आत्मविश्वास बढ़ता गया। जीविकोपार्जन अंतराल सहायता राशि से प्राप्त सहयोग ने उनकी पूंजी की कमी को पूरा किया। इसके बाद जीविकोपार्जन निवेश निधि दूसरी क़िस्त के तहत उन्हें सहायता मिली जिससे उन्होंने फ्रिज खरीदा और बकरी पालन शुरू किया। इससे उनकी आय और स्थिर हो गई। आगे चलकर जीविकोपार्जन निवेश निधि की तीसरी क़िस्त के अंतर्गत आर्थिक मदद से उन्होंने खेती का कार्य शुरू किया।

सायरा बानो ने अपने संघर्ष और मेहनत से जिंदगी को नई दिशा दी। अब उनकी आमदनी स्थिर है, उन्होंने बचत भी बढ़ाई और अपने लिए गहने भी खरीदे। उनका बेटा आज अच्छे स्कूल और कोचिंग में पढ़ाई कर रहा है। समाज जो कभी उन्हें अनदेखा करता था, वही आज उनका सम्मान करता है।

सायरा बानो का सपना है कि उनका व्यवसाय और आगे बढ़े और उनका बेटा शिक्षा के बल पर एक बेहतर भविष्य बनाए। उनकी कहानी बताती है कि आत्मविश्वास, कड़ी मेहनत और सही मार्गदर्शन से हर कठिन परिस्थिति को अवसर में बदला जा सकता है।

मुजफ्फरपुर जिले के बंदरा प्रखंड अंतर्गत रामपुरदयाल पंचायत की इस्मिता दीदी एक अत्यंत गरीब परिवार से आती हैं। जीविका से जुड़ने से पहले उनकी स्थिति बेहद दयनीय थी। परिवार की आर्थिक हालत इतनी खराब थी कि दो छोटे बच्चों और बीमार पति के साथ उनका जीवन संघर्षों से भरा हुआ था। पति की मानसिक स्थिति ठीक नहीं रहने के कारण परिवार का सारा बोझ इस्मिता दीदी के कंधों पर था। वह दूसरों के खेतों में मजदूरी कर किसी तरह अपने बच्चों और परिवार का पेट पालती थीं।

इसी बीच उनके दयनीय स्थिति को देखते हुए उनका चयन सतत् जीविकोपार्जन योजना के तहत हुआ। इस योजना के अंतर्गत उन्हें दुकान खोलने के लिए जीविकोपार्जन निवेश निधि, जीविकोपार्जन अंतराल सहायता राशि और विशेष निवेश निधि से कुल 37,000 रुपये की सहायता प्रदान की गई। इस राशि से उन्होंने अपनी छोटी सी दुकान शुरू की। धीरे–धीरे उनकी दुकान चल पड़ी और आय बढ़ने लगी। कुछ महीनों के भीतर ही वह अच्छी बचत करने लगीं।

आज इस्मिता दीदी अपने परिवार का भरण–पोषण अच्छे से कर रही हैं। उनके बच्चे स्कूल में पढ़ रहे हैं और परिवार का खान–पान भी सुधर गया है। जीविका ने न केवल उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार किया, बल्कि उन्हें आत्मनिर्भर बनने की राह भी दिखाई।

इस्मिता दीदी का कहना है कि जीविका उनके लिए किसी वरदान से कम नहीं है। उनका स्वभाव सरल और मिलनसार है, इसलिए लोग भी उनसे प्रभावित रहते हैं। दीदी कहती हैं की "जीविका ने मुझे जीने का नया रास्ता दिया। जीविका के दीदी–भैया मेरे लिए फरिश्ते हैं। मैं दिल से उनका आभार मानती हूँ।"

सतत् जीविकोपार्जन योजना के सहयोग से इस्मिता दीदी ने कठिनाइयों से निकलकर आत्मनिर्भरता की उड़ान भर ली है।

सतत् जीविकोपार्जन योजना की बदौलत ताड़ी और शराब को छोड़ रंजू कर रही मवेशी पालन

मजबूरी इंसान को किस तरह गलत राह पर धकेल देती है, इसका जीता–जागता उदाहरण है शेखपुरा जिले के शेखोपुर सराय प्रखंड अंतर्गत पहाड़िया गाँव की रहने वाली रंजू देवी। साधारण परिवार से आने वाली रंजू देवी का जीवन पति ओमकार चौधरी के रहते भी संघर्षों से भरा था। ओमकार चौधरी शुरु से ही ताड़ी और देशी शराब के व्यवसाय में लगे थे। यह व्यवसाय गैर कानूनी था, लेकिन यही उनके परिवार की आय का साधन था।

पति के गुजर जाने के बाद रंजू देवी पर चार छोटे–छोटे बच्चों का जिम्मा आ पड़ा। घर में खाने–पीने से लेकर बच्चों के पालन–पोषण तक की सारी जिम्मेदारी उनके कंधों पर थी। शुरू में उन्होंने जैसे–तैसे मजदूरी करके गुजारा करने की कोशिश की, लेकिन बढ़ते खर्च और सीमित आय ने उन्हें फिर से उसी पुराने रास्ते पर ढकेल दिया। मजबूरी में उन्होंने ताड़ी और शराब बनाना शुरू कर दिया। यह जानते हुए भी कि यह रास्ता गलत है और कभी भी जेल हो सकती है, फिर भी बच्चों का पेट पालने के लिए वह इस काम में लग गईं।

कभी जब शराब बिक जाती तो दो वक्त का भोजन ठीक से हो जाता, लेकिन जब किसी कारण से शराब न बिकती, तो बच्चों के साथ भूखे पेट रात गुजारनी पड़ती। उनके घर पर पुलिस की छापेमारी भी होने लगी। समाज में बदनामी और भय के बीच रंजू देवी की जिंदगी कट रही थी।

इसी बीच गाँव में सतत् जीविकोपार्जन योजना के अंतर्गत अत्यंत निर्धन परिवारों और ताड़ी–शराब के धंधे से जुड़े लोगों को सही राह पर लाने का अभियान शुरू हुआ। ग्राम संगठन की अध्यक्ष, सचिव और सामुदायिक संसाधन सेवी दीदी ने रंजू देवी को चिन्हित किया। 5 फरवरी 2022 को उनका चयन इस योजना के लिए किया गया। जब उनसे आजीविका के लिए विकल्प पूछा गया तो रंजू देवी ने बकरी पालन करने की इच्छा जताई।

माला जीविका महिला ग्राम संगठन ने उनका सूक्ष्म नियोजन किया और विशेष निवेश निधि के तहत 10,000 रुपये की सहायता दी, जिससे उन्होंने बकरियों के रख–रखाव के लिए शेड बनवाया। इसके बाद जीविकोपार्जन निवेश निधि के 16,000 रुपये से ग्राम संगठन के द्वारा पाँच बकरियाँ खरीदकर दी गई। साथ ही, जीविकोपार्जन अंतराल सहायता राशि के तहत उन्हें 7,000 रुपये की अतिरिक्त सहायता दी गई, जो हर महीने 1–1 हजार रुपये की किस्त में दी जाती रही ताकि शुरुआती दिनों में रोज़मर्रा का खर्च चलता रहे।

धीरे–धीरे बकरियों का पालन बढ़ा और उनके बच्चे बिकने लगे। इससे रंजू देवी को बचत होने लगी। कुछ ही समय में उन्होंने अपनी बचत से एक गाय भी खरीद ली। अब वह गाय का दूध गाँव में बेचने लगीं। दूध की आमदनी से न केवल उनका घर–परिवार चलने लगा, बल्कि बच्चों की पढ़ाई भी शुरू हो गई। धीरे–धीरे रंजू देवी का जीवन पटरी पर लौट आया।

आज की स्थिति यह है कि रंजू देवी बकरी पालन और गाय का दूध बेचकर महीने में औसतन 5 से 6 हजार रुपये की आय कमा रही हैं। अब उनके घर में दो वक्त का भोजन बिना किसी परेशानी के बनने लगा है। बच्चे स्कूल जाते हैं और स्वास्थ्य पर भी ध्यान दिया जा रहा है।

रंजू देवी कहती हैं कि अगर सतत् जीविकोपार्जन योजना से जुड़ने का मौका न मिला होता तो शायद आज भी वह उसी गलत राह पर चल रही होतीं। जीविका ने न केवल उनकी आजीविका बदली बल्कि उन्हें समाज में सम्मानजनक जीवन जीने का अवसर भी दिया।

रंजू देवी गर्व से कहती हैं– "आज मैं शराब छोड़कर मवेशी पालन कर रही हूँ। मेरे बच्चे पढ़ रहे हैं और मैं अपने परिवार को सही राह पर ला पाई हूँ। जीविका ने मेरे जीवन को संवार दिया। मैं तहे दिल से इस परियोजना और इससे जुड़े सभी दीदी–भैया का आभार व्यक्त करती हूँ।"

जीविका, बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, विद्युत भवन – 2, बेली रोड, पटना – 800021, वेबसाइट : www.brlps.in

संपादकीय टीम
- श्रीमती महुआ राय चौधरी – कार्यक्रम समन्वयक (जी.के.एम.)
- श्री पवन कुमार प्रियदर्शी – राज्य परियोजना प्रबंधक (संचार)

संकलन टीम
- श्री विकास राव – प्रबंधक संचार, भागलपुर
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, नवादा
- श्री रौशन कुमार – प्रबंधक संचार, लखीसराय
- श्री बिप्लब सरकार – प्रबंधक संचार